Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 06/July/2025 IJRAW: 2025; 4(8):175-178 Accepted: 16/August/2025

आदिवासी समाज और संस्कृतिः कोकणी जनजाति के संदर्भ में

[*1]डॉ. मधुभाई गायकवाड

[*1]समाजशास्त्र विभाग, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत, गुजरात, भारत।

सारांश

विश्व में सामाजिक परिवर्तन के आधुनिक प्रवाहों के बीच शायद ही ऐसा कोई समाज बच्चा होगा जो कि इन प्रवाहो से प्रभावित न हुआ हो। विश्व के अन्य समाजों के समान जनजातिय समाज भी परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा है। यह प्रक्रिया गुजरात की जनजातियों में भी दृष्टिगोचर हो रही है, इनमें से कोंकणी जनजाति भी एक जाति है। प्रस्तुत संशोधन आलेख को दो विभागों में विभाजित किया गया है। प्रथम विभाग में कोंकणी जनजाति का परिचय दिया गया है तथा दूसरे विभाग में सांस्कृतिक सातत्य एवं परिवर्तन की जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: आदिवासी समाज, संस्कृति, परिवर्तन, जनजाति आदि।

प्रस्तावना

गुजरात में कोंकणी जनजाति की तादात प्रमुख रूप से सुरत, वलसाड और डांग जिले में हैं। प्रस्तुत अभयास में डांग जिले की जनजाति के पांडवा गाँव को अभ्यास के लिए चुना गया है। प्रस्तुत अभ्यास के हेतु गाँव की जानकारी हेतु सर्वेक्षण एवं गुणात्मक पध्धति का उपयोग किया गया है। इसके उपरांत सेन्सस रिपोर्ट, गेजेटीयर्स एवं जिले की वार्षिक सांख्यकी का भी उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत अभ्यास के लिए चुना गया पांडवा गाँव, गुजरात के दक्षिणी भूभाग डांग जिले के मुख्य मथक आहवा से करीब २३ कि.मी. की दूरी पर महाराष्ट्र की सीमा के निकट चींचली रोड पर स्थित है। प्रस्तुत गाँव ९९३.९५ वर्ग. कि.मी. में फैला है। सन् २०११ की जनगणना के हिसाब से इस गाँव की जनसंख्या ७७७ की है। इनमें ४१७पुरूष एवं ३६० स्त्रियों का समावेश होता है। गाँव में कुल मिलाकर ९९ परिवार है, जिनमें ८५ परिवार कोंकणी जनजाति के हैं तथा १४, परिवार भीली जनजाति के हैं। गाँव के ९०% लोग कृषि व्यवसाय से जुड़े हुए है। कोंकणी जनजाति में शिक्षा का प्रमाण ५०.७० है, इसमें पुरूष एवं स्त्रियों में क्रमश ६२.१५ एवं ३७.८५% है। भौतिक सुविधाओं का विकास भी परिवर्तन के लिए अहम् भूमिका निभाता है। अतः प्रस्तुत गाँव में शिक्षा, बिजली, पानी, स्वास्थय, कृषक मंडली, युवक मंडली इत्यादि का होना गाँव के विकास का परिचायक है।

गुजरात की अन्य जनजातियों की तुलना में दक्षिण गुजरात में स्थित कोंकणा जनजाति सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक रूप में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जनसंख्या की दृष्टि से गुजरात की जनजातियों का क्रम सातवें स्थान पर हैं। कोंकणा जनजाति के संबंध में यह माना जाता है कि यह जनजाति महाराष्ट्र के कोंकण प्रान्त से दक्षिणी गुजरात में आई है तथा इसकी भाषा पर मराठी का विशे विशेष प्रभाव है। श्री रावल (१९८०-२२३) लिखते हैं कि 'कोंकणी' महाराष्ट्र के कोंकण प्रान्त से गुजरात में आये है। कोंकण क्षेत्र माने सह्याद्री पर्वत का पश्चिमी क्षेत्र (भगवत सिंहजीः १९४६-२४३७) वाडु (१९९०) इस जाति के संबंध में लिखते हैं कि कोंकण क्षेत्र से स्थानातरित होकर आने के कारण यह जाति कुंकणा, कोंकणा अथवा कोंकणी नाम से जानी जाती है। ग्रियर्सन (१९०७-१३०) लिखते हैं कि, कोंकणी जनजाति लगभग १६वीं शताब्दी में डांग प्रदेश में बसी और फिर धीरे-धीरे उसने उत्तर की ओर बसना शुरू किया। वैसे भी डांग, वलसाड, सूरत जिले का क्षेत्र पर्वतीय इलाका है तथा थाणा जिला इस जाति के कोंकण प्रदेश जैसा तथा उनका निकटवर्ती क्षेत्र-सा प्रतीत होता था। अतः इस जाति ने यहीं पर रहना अधिक उपयुक्त समझा और यह जाति यहीं बस गयीं। इस प्रकार यह जाति इस क्षेत्र में कोंकणी, कोंकणा तथा कुंकणा नाम से पहचानी जाती है। इस जाति की कुनबी व कोंकणी दो उपजातियाँ है। इस प्रकार कोंकणी जनजाति में भौगालिक रूप कोंकणा नाम भी जुडता है। वैसे भी कोंकण क्षेत्र दक्षिणी गुजरात प्रदेश के निकट पडता है। इस प्रकार यह जाति गुजरात व महाराष्ट्र में कोंकणा, कुंकणा या कोंकणी नाम से जानी जाती है। दादरानगर हवेली के कोंकणी जनजाति के दो भेद किये जा सकते है। एक हिंदू कोंकणा एवं इसाइ कोंकणा। संख्या की दृष्टि से कोंकणा जनजाति की संख्या महाराष्ट्र में ६१.८७%, गुजरात में ३५.६८%, राजस्थान मैं ०३%, तथा कर्णाटक में ०.०१%, एवं दादरा नगर हवेली में भी छूटपूट संख्या दिखाई देती है। गुजरात की २०११ की जनगणना के हिसाब से जनजातियों की जनसंख्या ८०२१८४८ है और प्रतिशत के हिसाब से १४।७५ प्रतिशत उनमें भील, दूबला, गामीत, चौधरी, राठवा, धानका, कोंकणा, वारली एवं कोटवालिया जनजाति का समावेश होता है। कोंकणा जनजाति की संख्या सन् २०११ में ३,६१,५८७ थीं। गुजरात में विशेषतः दक्षिणी

*Corresponding Author: डॉ. मधुभाई गायकवाड

गुजरात में ९३.७७% हैं-वलसाड में ६५.९६%, डांग में २२.९८% एवं सुरत में १०.८३% हैं। शेष ग्यारह जिलों में केवल ०.२३ प्रतिशत की बस्ती है।

भारतीय आजादी के पश्चात् सबको समानता का हक मिला और उसके कारण आधुनिक शिक्षा एवं सरकारी नौकरियों में जनजातियों के लिए संविधान में आरक्षण के कारण तथा जनजातियों को दिये गये विकास के अवसरों के परिणाम स्वरूप तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण एवं सरकारी योजनाओं के अमलीकरण के कारण से तथा अन्य विकसित जातियों के संपर्क के कारण पिछडी समझी जातियों में भी विकास व परिवर्तन का दौर शुरू हुआ है। कोंकणा जनजाति भी इस वर्तमान विकास व परिवर्तन के दौर से अछूती नहीं रही है और उसी परिवर्तन को हमारे अध्ययन-आलेख में प्राप्त तथ्यों के आधार पर परिवर्तन के उक्त प्रवाह के स्वरूप को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

वेरीयर एल्वीन (१९६०) ने बाहरी संपकों के आधार पर भारत की जनजातियें को चार श्रेणियों में विभाजित किया है-१. प्राथमिक अथवा सरल जीवन जीनेवाली अति आदिम जातियां, २. परंपरागत जीवन जीनेवाली एवं बाहरी संपर्को के कारण सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन को महसूस करनेवाली जनजातिया, ३. जिन जनजातियों की संस्कृति बाहरी सांस्कृतिक संपकों के कारण नष्ट हो गयी है तथा ४. बाहरी संस्कृक्ति के संपर्कों के बावजूद अपनी मूल संस्कृति को अपने साथ जोडकर जीनेवाली अनुसूचित जनजातियाँ ।

ऊपर्युक्त चारों श्रेणियों में से कोंकणी जनजाति को द्वितीय श्रेणी में रखा जा सकता है। कोंकणा जनजाति प्रमुख रूप से उनके सामाजिक-सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपरागत सुत्रों को अपने साथ बनाये रख सकती है तथा अपने जीवन निर्वाह के लिए अपने परंपरागत आर्थिक उपादानों का इस्तेमाल कर रही है। बावजूद इसके, प्रस्तुत जनजाति बाहरी संस्कृक्ति के संपर्कों से अलिप्त भी नहीं रही है। वास्तव में वह बाहरी संपकों से प्रभावित भी हुई हैं। इतना ही नहीं जीवन के भिन्न-भिन्न परिवर्तित रूपों से प्रभावित हो रही हैं। सांस्कृतिक के भौतिक रूपों में परिवर्तन का यह प्रवाह अधिक स्पष्ट रूप में दिखाई देता है, जब कि सामाजिक एवं अभौतिक रूपों में यह जनजाति संक्रांतिकाल से गुजर रही है। इस तथ्य को निम्नांकित रूपों में परिवेक्षित किया जा सकता है।

परंपरागत शैली एवं स्वरूप के साथ टिके हुए पहलु कोंकणा जनजाति में परिवर्तन के प्रवाहों के बीच अनेक पहलु ऐसे हैं, जिनमें आज भी परंपरागत सातत्य दृष्टिगोचर होता है। ऐसा सातत्य भौतिक सांस्कृतिक, समाजजीवन, रीति-रशम एवं मान्यताएँ, आर्थिक जीवन के साथ धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन के कई महत्वपूर्ण क्षेत्र में दिखाई देता है यह क्षेत्र कोंकणाओं में परंपरागत अस्मिता का प्रतिनिधित्व करता है।

भौतिक संस्कृति

सामान्यतया घर को जीवन का महत्वपूर्ण केन्द्र माना जाता है। कोंकणा जाति का घर केवल रहने के लिए भौतिक सुविधा मात्र नहीं है, अपितु घर का सामाजिक व सांस्कृक्तिक महत्व भी है। परंपरागत सामाजिक व धार्मिक अपेक्षाओं को पूर्ण करने में घर का महत्वपूर्ण प्रभाव है, अतः उसे बनाते समय अपनी परंपरा का भी ध्यान रखा जाता है। गृहोपयोगी चीजें जैसे कि सूप, टोकरी, सादडी, कोठी इत्यादि का आज भी उपयोग होता है। कृषि संबंधी औजारों हल, बैलगाडी इत्यादि का आज भी प्रयोग होता है।

कोंकणा जनजाति का प्रमुख व्यवसाय अथवा पेशा खेती अथवा कृषक कार्य है। इसके अलावा आजीविका के लिए शिकार एवं मच्छीमारी का काम भी करते हैं। उनके शिकार व मच्छीमारी के साधन अथवा औजार चिकाटी, झापीला, सटका, वागुर, सोकया, जाली इत्यादि परंपरागत औजार ही है। वन्य पशुओं का शिकार करने पर सरकार द्वारा रोक लगायी जाने के बावजूद छिपकर अपना पेट पालने के लिए शिकार किया जाता है।

कोंकणा जनजाति के समग्र जीवन के साथ संगीत एवं नृत्य जैसे एक रूप हो गया है। उनके मनोरंजन के साधनों में थाली, पावरी, ढोलक, मादळ, ढकि, घांघणी आदि आज भी महत्वपूर्ण साधन है। समाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक अवसरों पर इन वाद्यों का महत्व है। शैक्षणिक एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवार भी परंपरागत भौतिक साधनों का उपयोग करने में हीनता का भाव महसूस नहीं करते हैं। इस प्रकार उनका अपनी संस्कृति के बारे में दृष्टिबंदु नहीं बदला है।

सामाजिक जीवन

कोंकणा जनजाति में गोत्र का उल्लेख है, पर कहीं भी उच्च या निम्न जैसा कोई भेदभाव नहीं है। गोत्र सामूहिक एकता को बनाए रखने के लिए सहायक बनने की भावना को प्रकट करता है। इतना ही नहीं प्रत्येक गोत्र का सदस्य एक दूसरे को भाई-बहन मानता है। अतः एक ही गोत्र में वैवाहिक संबंध वर्जित माना जाता है। गोत्र का संबंध संपूर्ण पहचान के साथ है और विभिन्न अवसरों तथा विवाह, जन्म, मृत्य आदि अवसर पर गोत्र का उल्लेख किया जाता है।

कोंकणा पितृसत्ताक, पितृस्थानी एवं पितृवंशीय परिवार व्यवस्था में मानते है। पूर्ववर्ती समाजशास्त्री के अनुसार जनजातिय समाज के पारिवारिक व्यवस्था के बारे में लिखा है कि, जनजातियों में विभक्त परिवार का प्रमाण अधिक है। पश्चिम एवं आधुनिक विकसित समाज में विभक्त परिवार की अवधारणा के समान कोंकणा समाज में भी बाहर से दिखाई देता है, पर सुक्ष्मता से देखें तो संयुक्त परिवार की भावना अब भी कोंकणा समाज में विद्यमान है। उदाहरण के रूप में इस जनजाति के कई लोग कृषि व पशुपालन तथा जीवन निर्वाह से संबंधित कार्य साथ-साथ करते दिखाई देते हैं।

धार्मिक दृष्टि से देखें तो आज भी कोंकणा समाज में तीज-त्यौहार के अवसरों पर परिवार की वरिष्ठ व्यक्ति ही देवी-देवता का पूजन करती है। आजीविकार्थ बाहर रहनेवाले परिवार के सदस्य भी धार्मिक अवसर पर परिवार में सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार पारिवारिक विभक्तता नहीं है।

कोंकणा जनजाति में विवाह संबंध में परंपरागत ढांचा अब भी टिका हुआ है तथा अपने संबंधियों के लिए प्रयोग में लाये जानेवाले शब्द, मर्यादा-मशखरी संबंध इत्यादि परंपरागत रूप में विद्यमान हैं। कोंकणा समाज में स्त्री का स्थान बहुधा पुरूष के समकक्ष है तथा अर्थव्यवस्था में स्त्री की भूमिका बराबर की है। सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष को लेकर भी स्वी को काफी स्वतंत्रता है।

कोंकणाओं में उनके अपने सदस्यों के लिए व्यवहार की एक प्रकार की आचार संहिता निश्चित करके व्यक्तिगत एवं सामुहिक वर्ताव प्रणालिका परापूर्व से चली आ रही है। जातिपंच व ग्रामपंच परंपरागत होने के बावजूद विकास का स्वीकार है तथापि ग्रामपंच व जातिपंच के पास जाने का व्यवहार भी बना हुआ है।

सामाजिक रीति एवं मान्यताएँ

कोंकणा समाज में जन्म, विवाह एवं मृत्यु संबंधी परंपरागत सामाजिक मूल्य टिके हुए है। माहवारी एवं प्रसूति की स्थिति में अब भी स्त्री को अपवित्र माना जाता है। प्रसूति के समय दायन को बुलाने का रिवाज अब भी है। यहां स्वास्थ जानकारी व चिकित्सालयों का अभाव कारण हो सकता है। बालजन्म विधि पांचोरा-पूजन परंपरागत रूप में ही होता है।

विवाह के रीति-रशम आज भी सातत्यपूर्ण रूप में बने हुए हैं। घर दामाद का रिवाज, वरपक्ष के द्वारा कन्या की मांग करना, नाम मात्र का दहेज कन्या के लिए चुकाना, कन्या के घर सगाई करना तेल जलाने की विधि, विवाह में बारसिंग बांधना आदि रशम में परंपरागत सातत्य बना हुआ है। इस प्रकार कोंकणा जनजाति के विधि विधानों

में परंपरा का बाहुल्य है, शिक्षा के प्रचार प्रसार तथा बाहरी संपकों के बावजूद परिवर्तन की हवा कोंकणा जनजाति को कम ही लगी है।

आर्थिक जीवन

आर्थिक जीवन के क्षेत्र में कोंकणा जनजाति आज भी कृषि पर ही निर्भर है। परंपरा से चली आ रही कृषि की एक पद्धति आदर आज भी उनमें प्रचलित है। फसल की तराह में भी कोई खास परिवर्तन नहीं हैं। अद्यावधि भौगोलिक परिस्थिति आधारित फसल नागली अथवा रागी, वरी तथा धान की फसल उगायी जाती है। यद्यपि विकास व बाहरी संपकों के परिणाम स्वरूप रोखमाल का उत्पादन किया जा रहा है। कृषि के साथ धार्मिक विचारों से कोंकणा संपूर्ण रूप से मुक्त नहीं हो सके हैं। देवी-देवताओं को भोग चढाना आदि परंपरा अब भी है। रासायणिक उर्वरक, बीज कीटनासक दवाइयाँ आदि का प्रयोग भी कृषि में होने लगा है।

आर्थिक क्षेत्र के श्रमविभाजन में स्त्री-पुरूष का भेदभाव नहीं है। आर्थिक क्षेत्र में वस्तु-विनिमय की परंपरा अब भी बनी हुई है। यद्यपि बाहरी समाज के संपर्क के परिणामस्वरूप अर्थ का महत्व समज में आया है। महद रूप में गाँव की दुकान से गृहोपयोगी चीजें प्राप्त हो जाती है तथापि साप्ताहिक हाट-बाजार का महत्व कम नहीं हुआ है। समग्रतया देखने पर आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन का दौर शुरू हुआ है। भौगोलिक परिवेश, कमजोर आर्थिक स्थिति और उसके साथ जुडी हुई सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक मान्यताओं के कारण उक्त समाज के विकास की गति धीमी अथवा कमजोर है अतः परिवर्तन भी कम ही हो रहा है।

लेखक के निरीक्षण एवं अनुभव तथा परीक्षण के आधार पर कहा जा सकता है की विकास के सरकारी कार्यक्रमों से कोंकणा जनजाति में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है। आज भी कोंकणी आर्थिक रूप से कमजोर ही है। यहाँ निश्चित रूप में कहा जा सकता है कि कोंकणी जनजाति का आर्थिक जीवन गुजरात की चौधरी, गामीत, घोडिया जनजाति की तुलना में कमजोर है, पर कोटवाळिया या कोली-कालधा जनजाति से बेहतर है। बौगोलिक स्थितियाँ भी उनके विकास में अवरोधक बनी हुई है तथा जमीन की अल्प उत्पादन क्षमता एवं कृषि के अनुकूल जमीन की कमी के कारण सपाट प्रदेश में रहनेवाली जनजाति जैसा जमीन अलगाव का प्रश्न यहाँ की जनजाति में नहीं हैं।

धार्मिक जीवन

कोंकणी लोग उनकी परंपरागत मान्यताओं को भूल नहीं पाये हैं और कई देवी-देवताओं में विश्वास करते हैं। मंत्र-तंत्र, पितृपूजा करते हैं उनके लोकनृत्य जैसे की डांगीनृत्य, ठाकरेनृत्य, भवाडा, मादळनृत्य आज भी परंपरागत ही हैं। मनोरंजन के साथ-साथ समाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पक्षों को उजागर करते है।

कोंकणी जीवनशैली में गृहव्यवस्था, रहन-सहन, घर की चीजें इत्यादि में बाहरी संपकों के कारण कुछ-कुछ आर्थिक स्थिति ठीक होने के कारण परंपरागत रूप में झोंपडियों में रहनेवाले कोंकणी अब पक्के या अध पक्के मकानें में रहने लगे हैं। इससे पहले उनके मकानों में खिडकिर्या या दरवाजों की सुविधा नहीं रहती थी, अब उनके घरों में यह सुविधाएँ उपलब्ध है। यह लोग परंपरागत रूप में अपने घरों में ही पशुओं को बांधते थे, पर अब स्वास्थय व स्वच्छता की दृष्टि से पशुओं के लिए अलग व्यवस्था की जाती है। यह उनकी गृह व्यवस्था में हुए परिवर्तन का परिचायक है। घर-गृहस्थी की चीजों में भी बाहरी संस्कृति से हुए संपकों एवं आर्थिक स्थिति में सुधार के परिणाम स्वरूप परंपरागत मिटटी के बर्तनों के स्थान पर स्टील, ताम्र-पित्तल के बर्तनों का उपयोग किया जा रहा है। पहनावे की शैली में शिक्षित एवं नौकरी पेशे करनेवाले स्त्री-पुरूषों में संपूर्णतया शहरी पहनावा दिखाई देता है। कोंकणी जनजाति में गोदना करवाने का परंपरगत भाव तथा महत्व समाप्त हो चुका है।

रीति-रश्मों एवं परंपरागत मान्यताओं में परिवर्तन

कोंकणी जनजाति में रीति-रश्मों एवं परंपरागत मान्यताओं में शिक्षा एवं बाहरी संपर्को के कारण धीरे धीरे परिवर्तन हो रहा है। स्त्री के गर्भ धारण करने के बाद पति-पत्नी को कुछ नियमों का पालन करना पडता था, पर आज उसका उतना महत्व नहीं रहा है। परंपरागत रूप में दायन ही बच्चे का नामकरण करती थी, पर अब कोई भी व्यक्ति बालक का नामकरण कर सकती है। बच्चे का नामकरण करने की परंपरागत आधार भी समाप्तप्रायः हो गए हैं तथा बाहरी समाज के संपर्क के कारण कोंकणी लोग भी शैलेष, किरण, वैशाली, जितेन्द्र जैसे आधुनिक नाम रखने का प्रमाण बढ़ता जा रहा है। विवाह में बारसिंग अनिवार्य बांधने का रिवाज अब कम हो गया है। इसके अलावा विवाह में मादल नृत्य करना, वर-वधू के प्रेम संबंध को मजबूत करने के लिए खेले जानेवाले खेल भी कम हो गये है। विवाह में धान देने की परंपरा भी कमजोर हो गयी है। मृत्यु के समय मान्यताएं भी कम हो गयी है। किसी व्यक्ति की रविवार को मृत्यु होती थी तो उसकी चिता में मुरगी चूजे डालने का रिवाज जीवहिंसा मानकर अब समाप्त किया जा रहा है। कृषि में उर्वरक न डालने की मान्यता भी कमजोर पडती दिखाई देती है तथा धान, नागली या वरी जैसे धान्य के साथ-साथ बाजारलक्षी फसले उगाने का प्रयास कोंकणी जनजाति में दिखाई देता है।

धार्मिक जीवन में परिवर्तन

कोंकणी जनजाति में धर्म संबंधी मूलभूत विचार एवं धार्मिक मान्यताएँ अदृश्य नहीं हुई है तथापि धार्मिक जीवन पर बिन आदिवासी संपकों तथा बाहरी समूहों की धार्मिक मान्यताओं का प्रभाव पड़ा है । इस कारण विविध धार्मिक क्रियाकांडो में परिवर्तन देखा जा सकता है। हिंदू देवी-देवताओं की पूजा व मान्ताओं का विकास हुआ है। कोंकणीक्षेत्र में इसाई गिरजाघर चर्च भी बांधे जा रहे है तथापि इसाई धर्म का स्वीकार कम है। कहीं-कहीं इसका विरोध भी हो रहा है। भक्ति संप्रदायों में मोक्षमार्ग, स्वामीनारायण व योगेश्वर का अधिक प्रभाव है। अब कोंकणी हिंदूओं के समान जनमाष्टमी, गनेशचतुर्थी, नवरात्री और क्रिसमस भी मनाने लगे हैं यह एक प्रकार से धार्मिकता के परिवर्तन का परिचायक है।

समग्रतया देखा जाए तो कोंकणी जनजाति एवं उनके साथ रहनेवाली अन्य जनजाति के लोगों के बीच मजबूत सामुहिक ऐक्य के दर्शन उनके परंपरागत देव-देवियों की पूजा विधि व तीज-त्यौहार, लोकनृत्य, विविध खेल इत्यादि में होनेवाले परिवर्तन की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। अन्यथा कोंकणी जनजाति की परंपराएं समाप्त हो जाने का खतरा बना रहेगा।

समग्र दृष्टिपात करने पर यह प्रतीत होता है कि कोंकणी जनजाति समाज की बाहरी संस्कृति अर्थात भौतिक संस्कृति विस्तृत हिंदू समाज में अधिक ओतप्रोत हो गई हैं, जब कि आंतरिक ढांचे में सातत्य का अनुभव करती है। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन के आधुनिक प्रभाव, सरकारी योजनाएं तथा बाहरी संस्कृति के साथ होनेवाले संपर्को के कारण कोंकणी जनजाति परंपरागत अर्थ में पहले जैसी पिछडी अवस्था में नहीं रही है। आसपास के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवेश में हो रहे परिवर्तन के कारण कोंकणी जनजाति के जीवन संबंधी दृष्टिकोण में एवं मानसिकता में परिवर्तन हो रहा है। कोंकणी जनजाति व्यवहार के स्तर पर एक स्पष्ट परिवर्तन के प्रवाह से गुजर रही है। यह बृहद् भारतीय समाज में दिखाई देनेवाले सातत्य एवं परिवर्तन की तराह का परिचायक है।

References

1. Bhagvatsinhji. *Bhagvatgomandal*, part –III. 1946.
2. Desai SM. *Tavarikhe Navsari*, Vadoda Rajay, Prantk sarvsangrah. Vadodara. 1939.
3. Rawal I. *Dharampur Vistar na Aadivasiona Vastro*. *Aadivasi Gujarat*. 1980;3. Gujarat Veedyapeeth, Ahmedabad.
4. Vadhu D. *Folk Litrature of Tribls of South Gujarat*. *Gujarat*. 1990;24.
5. Singh KS. *The Schedule Tribes*. National Series, Vol. III. Oxford University Press. 1994.
6. Elwin V. *The aborinals*. Oxford University Press. 1943.
7. Singh KS. *Communities, Segments, Synonyms, Surnames and Titles*. *People of India*, Vol. VIII. Oxford University Press. 1996.
8. Census of India. 2011.